UGC APPROVED JOURNAL - 47746

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 06 | July - September 2017

शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में जनसंचार माध्यमों का मानवीय मूल्यपरक शिक्षा पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

ललन कुमार
संत हिरदाराम गर्ल्स कॉलेज
भोपाल, (म.प्र)

डॉ चित्रा शर्मा
संत हिरदाराम गर्ल्स कॉलेज
भोपाल, (म.प्र)

सारांश

मूल्यपरक शिक्षा जो किसी समाज एवं देश के चहुँमुखी विकास का आधार है इसका` आगे बढ.ने तथा चरित्र पतन होने से समाज में सुख–शान्ति का समावेष नहीं हो सकता है। यही कारण है कि देश की भौतिक प्रगति होने के बावजूद भी देश का` अराजकता की स्थिति से गुजरना पड़ रहा है। अतः शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि वांछित उच्चतम मूल्या` का विकास हो सके और यह तभी संभव है जब शिक्षक में स्वयं व्यक्तिगत मूल्यों का समावेष हों ।

प्रस्तावना

शिक्षा समाज का दर्पण है और मूल्य उसके प्रतिबिम्ब। समाज में प्रचलित मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। यदि किसी राष्ट्र को पूरे विश्व में अपनी अच्छी पहचान बनानी हो तो उस राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श व मूल्यों का परिपूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसके लिए शिक्षा एक ए`सा प्रभावी माध्यम है जो एक राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श और मूल्यों को एक आइने की तरह दर्शाता है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक व छात्र दो प्रमुख घटक है जो समाज में हितकारी परिवर्तन ला सकते हैं। ये भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नये विचार, नये दृष्टिकोण, नये मूल्यों का` स्थापित कर देश के भविष्य को उज्जवल बना सकते हैं। प्रत्य`क व्यक्ति अपने जीवन में मूल्यों के आधार पर यह निश्चित करता है कि उसे किस प्रकार से जीवन आगे बढ़ाना चाहिए क्यूंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अपने अलग अलग मूल्य होते हैं और वह उसी के अनुसार अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करता है|

मूल्यों के लक्षण :

1. मूल्य वस्तुओं के महत्व के बारे में विचार हैं।
2. मूल्य प्रत्यय, अमूर्तिकरण व भावनाएँ भी है तथा उनके संज्ञानात्मक, अनुभावात्मक व क्रियात्मक पक्ष है।
3. मूल्य सशक्त सांवेगिक वचनबद्धता भी है। व्यक्ति जिस चीज को मूल्यवान मानता है उसे अत्यधिक पसंद करता है व उसकी बहुत चिंता करता है।
4. सभी विचारों की भाँति मूल्यों का अस्तित्व अनुभव के क्षेत्र में नहीं वरन लोगों के मन में है।
5. बिना तर्क के मूल्य अंधे होते हैं, बिना भावनाओं के वे अशक्त होते है तथा बिना कार्यों के खाली होते हैं।
6. यद्यपि मूल्य भावनाएँ या संवेग नहीं है तथापि उनमें इच्छाएँ व भाव नीहित हैं। वे अपने आप में विश्वास या निर्णय नहीं परन्तु वे चिंता में तथा उसके माध्यम से प्रकट होते है।
7. वस्तुओं के महत्व की जांच के लिए उन्हें स्पष्ट मानदण्ड के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

मूल्यपरक शिक्षा जो किसी समाज एव ं देश के चहुँमुखी विकास का आधार है|सृजनशीलता व कार्य के लिए प्रतिबद्धता ये अच्छे शिक्षक में होना अनिवार्य है ए`स` शिक्षक सदा विद्यार्थियों के लिए श्रद्धा व सम्मान के पात्र होते हैं। ऐस` शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों का विश्वास बढ़ता है |

शिक्षक विद्यार्थियों का` अशुभ, अवांछनीय, असामाजिक एव ं उद्देश्य रहित दिशा में कदम बढ़ने से रोक सकते हैं | शिक्षक विद्यार्थियों की सुसंस्कारित व जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए एक उपयुक्त वातावरण तो प्रदान करते ही हैं।साथ–साथ विद्यार्थियों को नकारात्मक वातावरण के दुष्परिणामों से भी सच`त करते हैं।

शिक्षक के प्रत्येक कार्य में चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक कोई भी क्यों न हो, छात्रों को उसमें राष्ट्रीय व नैतिक मूल्यों के स ंस्कार प्रतिबिम्बित होने चाहिए इसस` छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण व अच्छ` संस्कारों का स ृजन होगा तथा नई पीढ़ी ं सत्यनिष्ठा, परोपकार, देश सेवा, कर्तव्यपरायणता आदि शाष्वत मानवीय मूल्यों का समुचित विकास होगा। शिक्षक को छात्रों का आदर्श बनने की आवश्यकता है जिसके सम्पर्क में आने से लोहा भी कुन्दन बन जाता है।

पूर्व में हुए शोध

ओसिरिव, पीटर (2015) ''सामाजिक मीडिया और लागोस के विश्वविद्यालय में छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन'' लागोस यूनिवर्सिटी, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव पडता है। जो समय विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए उस कीमती समय को सोशल साइट्स पर बर्बाद करते है। जहां इसके नुकसान है वहीं कई फायदे भी है। बच्चे अपने प्रोजेक्ट डिस्कस कर लेते है। ग्रुप में अच्छी तरह किसी भी कार्य की प्लानिंग कर सकते है और किसी कारणवश कोई विद्यार्थी जो स्कूल नहीं आ सकते वो अपनी एकेडमिक सूचना भी प्राप्त कर सकते है। इसके लिए स्कूल एवं सरकार को भी सोशल साइट्स पर कुछ प्रतिबंध रखना चाहिए कि एक निश्चित सीमा में ही विद्यार्थी इन साइटों को देख सके। रूथ डेविड ने फॉरविस मैगजीन, न्यूयार्क, अंक 3, (20 मार्च, 2014) में लिखा है कि मीडिया के नए आंकडे बताते है कि विदेशी पूँजी निवेश को भारत में अनंत संभावनाएँ हैं। भारत में लोग ज्यादा चैनल देखना चाहते हैं। प्रतिवर्ष इस क्षेत्र में 20 फीसदी आय में इजाफा हो रहा हैं। सन् 2011 तक समग्र आय 22.5 बिलियन डॉलर का आंकडा पार जाएगी क्योंकि उपभोक्ता की आय में निरंतर इजाफा हो रहा है।

हॉग, जे.ए. (2014), ''सोशल मीडिया एस ए वेक्टर फोर यूथ वॉयलेन्स, लंदन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस में कहना है कि संचार मीडिया के प्रचार के परिणाम स्वरूप सामने आने वाला उपभोग, मनुष्य में एक द्वितीय प्रवृत्ति उत्पन्न करता है और उसे पहले से अधिक, समाज में प्रचलित हित साधने के वातावरण पर निर्भर कर देता है। विभिन्न वस्तुओं का उभोग और उन्हें निरंतर बदलते रहना जो वस्तुतः उस पर थोपी गई होती हैं, उसे जीवन को खोने की सीमा तक भी ले जा सकता है और ख़तरे की कल्पना से भी बढ़ कर उसके निकट कर सकता है। पश्चिमी समाजों की वर्तमान स्थिति इस दावे को बल प्रदान करती है कि जीवन स्तर के ऊपर जाने के बाद कम ही लोग अपनी ख़रीदारी की क्षमता पर ध्यान देते हैं। इस बीच टेलीविजन के कार्यक्रम विशेष कर टीवी धारावाहिक, धनाड्य लोगों के जीवन का चित्रण करके हर सामाजिक व आर्थिक स्तर के परिवारों तक इन्हें पहुंचा देते हैं।

अमरीकी लेखक सेबियान गोंज़ालेस (2012), 'मीडिया कल्चर इन अमेरिका', न्यूयार्क, द फ्री प्रेस में अमरीकी समाज में उपभोग की संस्कृति की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि हम सभी अमरीकी प्राचीन काल से एक अलिखित सामाजिक समझौते पर विश्वास करते आए हैं जिसके आधार पर जब आप कोई फ़िल्म देखने के लिए सिनेमा हाल में जाते हैं तो फिर दर्शकों को विज्ञापन दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि पूरी फ़िल्म ही विज्ञापन है। यही कारण है कि केबल से प्रसारित होने वाले चौनलों को काफ़ी लोकप्रियता प्राप्त है क्योंकि उनमें विज्ञापन नहीं होते जबकि उनमें दिन रात फ़िल्मों एवं टीवी धारावाहिकों के माध्यम से वस्तुओं का प्रचार किया जाता है। उदाहरण स्वरूप किसी फ़िल्म या धारावाहिक के एक दृश्य में कोई महिला रसोई में बर्तन धो रही होती है। अब आप उसके घर को देखिए, निश्चित रूप से आपको ऐसी वस्तुएं दिख जाएंगी जो केवल संभ्रांत लोगों के घरों में ही होती हैं किंतु फ़िल्में और टीवी के धारावाहिक, चरित्रों के माध्यम से आपको अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं और न केवल उनका जीवन बल्कि उनका खान–पान, व्यायाम, वस्त्र पहनने की शैली और इसी प्रकार की अन्य बातें आपके मन पर अमिट प्रभाव डालती हैं।

पैक और कॉमस्टॉक (2012) स्टेटिक्स ऑन कैंसर, लंदन में 1994 में कई तथ्य एकत्रित किए। आगे इन्होनें इन्हीं तथ्यों का नवीनीकरण किया और 2011 तक के तथ्यों का संकलन किया। इनके अध्ययन में मीडिया हिंसा का भयानक रूप यह निकल कर सामने आया कि इससे नशा, हिंसा और अपराध की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो समाज में कैंसर, एड्स जैसी बिमारियों के साथ–साथ समाज में अपराधियों की संख्या बढ़ा रही है। इसी प्रकार,

समाज अपने विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों स` ही जाना जाता है। ये मूल्य उस समाज के सदस्यों के जीवन में आचरण के सामाजिक सांस्कृतिक मानदण्डों के आधार पर **बनते हैं**द्य शिक्षा स` व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने के अलावा उसके भौतिक कल्याण की आशा भी की जाती हैं। जीवन संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण जैसे– भौतिकवादी, उपयोगितावादी, मानवतावादी, अल ंकारिक दृष्टिकोण शिक्षा को अलग–अलग महत्व देते है।स ुमित्रा सिंह, मैथिलीरमण प्रसाद सिंह (2009) ने ''वर्तमान शिक्षा के मूल्य स ंकट क्यों कारण एवं स ुझाव'' का अध्ययन कर यह पाया कि, यह सव ंविदित हैं कि जब–जब मूल्यों से ज ुड़ने का प्रयास किसी समुदाय या समाज के व्यक्ति ने किया वह सामान्य मनुष्य की परिधि से उठकर महामानव की श्रेणी में जा पहुंचा तथा समाज एवं विश्व में नई दिशा प्राप्त की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओसिरिव, पीटर (2015),'''सामाजिक मीडिया और लागोस के विश्वविद्यालय में छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन'' लागोस यूनिवर्सिटी, 2015
2. हॉग, जे.ए.; (2014),सोशल मीडिया एस ए वेक्टर फोर यूथ वॉयलेन्स', लंदन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
3. गोंजालेस, सेबियान; (2012), 'मीडिया कल्चर इन अमेरिका', न्यूयार्क, द फ्री प्रेस
4. पैक और कॉमस्टॉक; (2012), स्टेटिक्स ऑन कैंसर, लंदन
5- स ुमित्रासि ंह, मैथिलीरमण (2009), वत ंमान शिक्षा के मूल्य संकट क्यों कारण एव ं सुझाव